संस्कृत और हिन्दी नाटक

रचना एवं रंगकर्म

डॉ. जयकुमार जलज

Scanned with OKEN Scanner

संस्कृत और हिन्दी नाटक
रचना एवं रंगकर्म

डॉ. जयकुमार जलज

आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान
दिल्ली-110094

ISBN : 978-93-80943-88-6

© : लेखक

प्रकाशक : आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान
डी-48, गली नं. 3, दयालपुर,
करावल नगर रोड, दिल्ली-110094
दूरभाष : 9868584456

मूल्य : **500 रुपये**

प्रकाशन वर्ष : 2018

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : रुचिका प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

Sanskrit Aur Hindi Natak : Rachna Evam Rangkaram
by Dr. Jaykumar Jalaj

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

प्राक्कथन 7

प्रथम खण्ड

1. संस्कृत नाट्यशास्त्रीय चिंतन : क्रमिक विकास 13
2. संस्कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित नाट्य के प्रमुख तत्त्व 23
3. संस्कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार नाट्य का उद्देश्य 49
4. संस्कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित नाट्यविधि और उससे संबंधित उपकरण 53

द्वितीय खण्ड

5. संस्कृत नाट्य : क्रमिक विकास : विभिन्न प्रकार और शैलियाँ 63
6. भास 73
7. शूद्रक 83
8. कालिदास 101
9. अश्वघोष 115
10. हर्ष 119
11. भवभूति 131
12. विशाखदत्त 147
13. कृष्णमिश्र 160

तृतीय खण्ड

14. हिन्दी नाट्य-साहित्य 170

(अ) प्राक् भारतेन्दु युग-संस्कृत नाटकों के अनुवाद, मौलिक साहित्यिक नाटक, लोकधर्मी नाटक।

(आ) प्राक् प्रसाद युग- भारतेन्दु के नाटक : अनूदित : रत्नावली, विद्यासुन्दर, पाखंड विडम्बन, धनंजयविजय, मुद्राराक्षस, कर्पूरमंजरी, दुर्लभबन्धु। मौलिक : पौराणिक नाटक, सामाजिक-राजनीतिक नाटक, ऐतिहासिक नाटक, प्रहसन। समकालीन अन्य नाटककार। रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य और

Scanned with OKEN Scanner

भारतेन्दुयुगीन नाट्यरचना की सीमाएँ। संस्कृत नाट्य और रंगपरम्परा के प्रभाव।
(इ) प्रसाद युग
प्रसाद के नाटक :
आरम्भिक नाटक, परवर्ती विकास। रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य और संस्कृत नाट्यपरम्परा के अन्तरंग प्रभाव, संस्कृत नाट्य तंत्र के स्थूल विधानों का अस्वीकार। समकालीन अन्य नाटककार।
(ई) प्रसादोत्तर युग
पाठ्यक्रमीय नाटक, लक्ष्मीनारायण मिश्र और रामकुमार वर्मा के नाटक। अव्यवसायी रंगमंचीय सक्रियता और उसके सुफल। जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, दुष्यन्त, रमेश बक्षी, सुरेन्द्र वर्मा, मुद्राराक्षस, शंकर शेष तथा अन्य नाटककार।
15. उपसंहार 219
हिन्दी नाट्यरचना तथा रंगकर्म के क्षेत्र में प्रस्तुत अध्ययन के फलितार्थ।
रचना
(1) नाट्यवस्तु का चयन : सीमित निष्क्रिय वर्ग और ख्यात कथावस्तु की रूढ़ि, तेज कुतूहल का प्रश्न, जटिल वस्तु योजना का निषेध, संयोगतत्त्व, समय और स्थान के संकलन, कथावस्तु की इकहरी बुनावट का विरोध, आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु। (2) चरित्र सृष्टि : नायक तथा अन्य पात्र, नायक की प्रधानता का प्रश्न, पात्रों का कुलशील, वर्गपात्रीयता बनाम व्यक्तिपात्रीयता। (3) काव्यात्मकता-समग्र प्रभाव- रस-प्रेक्षकोन्मुखता।
रंगकर्म
(1) रंग निर्देश (2) पूर्वरंगविधि (3) प्रस्तावना (4) विश्वसनीय सहज रंगमंच (5) अभिनयोन्मुखता-प्रतीकात्मकता (6) संवाद : वाचिक अभिनय : संवादयोजना के पीछे रस और काव्यदृष्टि की प्रधानता का प्रश्न, ध्वनिविस्तारक यंत्र और बदली हुई परिस्थितियों के कारण संस्कृत नाट्य संवादों की कुछ विशेषताओं की अप्रासंगिकता, सूक्तिप्रयोग, विभिन्न भाषास्तर, स्वगतकथन (7) प्रेक्षागृह (8) भरतवाक्य
सन्दर्भ-ग्रन्थ 269

डॉ. जयकुमार जलज

डॉ. जयकुमार जलज : 2 अक्टूबर 1934 को ललितपुर (उ. प्र.) में जन्म। एम.ए. (हिन्दी साहित्य) 1957 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। पी-एच.डी. विक्रम विश्वविद्यालय से 1977 में। इलाहाबाद में पढ़ते वक़्त डॉ. रामकुमार वर्मा के साथ 'बुन्देलभूमि' और डॉ. राजकुमार शर्मा के साथ 'त्रिवेणी' साहित्य पत्रिका का सम्पादन।

सन् 1961-62 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक। मध्यप्रदेश शासन की स्थानान्तर वाली नौकरी में उच्च शिक्षा के तहत सतना, रीवा, बरेली, सीहोर में सहा. प्राध्यापक, रतलाम के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष और फिर उसी में 1983 से सन् 1994 में सेवानिवृत्ति तक प्राचार्य। अब स्वतंत्र लेखन। प्राचार्य रहते हुए भी डॉ. जलज ने न कभी कक्षा अध्यापन से विराम लिया न शोध निर्देशन से। उनके निर्देशन में 11 छात्रों ने पी-एच.डी. प्राप्त की।

कविता का पहला प्रकाशन 19 जून 1950, दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली। पहला काव्य प्रसारण 26 जनवरी 1951, आकाशवाणी लखनऊ, इलाहाबाद।

पहला कविता संकलन 'सूरज सी आस्था' 1958 में। कविताएँ, गीत, लघुकथाएँ, समसामयिक तथा अन्य विषयों पर अनेक लेख, टिप्पणियाँ, विचार-पत्र।

भाषाशास्त्र पर पहली पुस्तक 'ध्वनि और ध्वनिग्रामशास्त्र' 1962 में। शोध और समीक्षा की पहली पुस्तक 'संस्कृत नाट्यशास्त्र : एक पुनर्विचार' 1962 में। डॉ. सुरेन्द्रनाथ गुप्ता के साथ 'तुम कहाँ से आए' पुस्तक बाल विज्ञान पर 1964 में। 'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान' पुस्तक 1972, 2001 और अब 'भाषाविज्ञान' पुस्तक 2018 में। 'संस्कृत और हिन्दी नाटक : रचना एवं रंगकर्म' 1985, 2000 और अब 2018 में। 'भगवान महावीर का बुनियादी चिन्तन' पुस्तक 2002 में, अब तक 52 संस्करण। कविता संचयन 'किनारे से धार तक' 2013, 2016 में।

प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश के कुन्दकुन्द, पूज्यपाद, जोइन्दु जैसे अनेक रचनाकारों को जिनके तार सीधे कबीर तक आते हैं हिन्दी में अनूदित किया।

ध्वनि और ध्वनिग्राम शास्त्र, तुम कहाँ से आए, संस्कृत और हिन्दी नाटक : रचना एवं रंगकर्म पर मध्यप्रदेश शासन का क्रमशः कामताप्रसाद गुरु पुरस्कार 1967, अखिल भारतीय विश्वनाथ पुरस्कार 1967, भोज पुरस्कार 1985। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का साहित्य सारस्वत सम्मान 1998। मध्य प्रदेश लेखक संघ का सर्वोच्च सम्मान अक्षर आदित्य 2006। अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान इलाहाबाद का राष्ट्रभाषा गौरव 2011। श्रुत सेवा निधिन्यास फीरोजाबाद का आचार्य महावीर कीर्ति अलंकरण 2012। अ.भा. बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्, भोपाल का राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार 2013। आचार्य हस्ती करुणा लेखक सम्मान चेन्नई 2014, श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का शताब्दी सम्मान 2017।

आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान

दिल्ली-110094 मो. : 09868584456

9 789380 943886

Scanned with OKEN Scanner